आदित्य सौरभ की कविताएँ

स्नातकोत्तर छात्र
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलोंग, मेघालय
aditysaurabhdel011@gmail.com

अधखुली मेघालयी आंखें

मैंने देखा था उसकी अधखुली मेघालयी आंखों में,
उमड़ते हुए मेघों को,
जिससे वो धो-देना चाहती थी, हम पतितों को,
हमारी कट्टरताओं को
हमारी अमानवीयताओं को,
खैर...
आज सब मोमबत्तियाँ जला रहें हैं,
मनुष्यता की नहीं, उस अधखुली मेघालयी आंखों
की हार पर।
पर, इनकी आंखों में मैंने कोई मेघ नहीं देखा,
ये तो अपना-अपना चावल पका रहे हैं,
आज सब मोमबत्तियाँ जला रहें हैं।
मेरे लिए ये कुछ नया नहीं है,
कुछ भाषण, कुछ आक्रामकता
सामाजिकता की आड़ में नंगी होती मनुष्यता,
फिर फेसबुक, ट्विटर पर न्याय मांगती
तथाकथित बौद्धिकता।
मेरे लिए ये कुछ भी नया नहीं है।
चावल पकाने वालों की जगह, जब-तक
ना मोमबत्तियां 'मनुष्यों' के हाथ में होगी,
तब तक यूंही अधखुली मेघालयी आंखें
खैर...।।
मैंने देखा था उसकी अधखुली मेघालयी आंखों में,
उमड़ते हुए मेघों को।

मुखौटाधारी

ऐ राष्ट्र तुम क्यों नहीं समझते,
तुम्हारा बच्चा ही तो है मार्क्स
ऐ मार्क्स तुम क्यों नहीं समझते,
तुमने जो किया वो राष्ट्र के लिए तो था
ऐ समाज तुम क्यों नहीं समझते,
कभी तुम्हारे ठीक रहने पर ही
निरंकुशता पे अंकुश लगा था
आज तुम सब चरमराये हुए क्यों हो ?
एक दूसरे पर आरोपों-प्रत्यारोंपों का
पहाड़ लगाये हुए क्यों हो ?
मौका तो तुम सबने पाया था
पर काम कुछ नहीं, दूसरा वाद
घोर-घंघोर चोर ,आदमखोर ठहराया था
खोटा वाद नही ,खोटे मुखौटाधारी वादी हैं
वादों के झंडे तले, ये अपराधी हैं
ये सिर्फ़ राष्ट्र नहीं, सब विचारधारा खा जाऐंगे।
अभी तो वादों के नाम पर बस आटा चावल
मोट्रसाईकिल ,साबुन सैम्पू ही बिका है
कल ये, चड्डी तक बेच जाऐंगें ।
हमें इन को भगाना होगा ।
इके मुखौटे को हटाना होगा ।
राष्ट्र, मार्क्स, समाज सब वादों की
वास्तविक परिकल्पना इन्हें समझाना होगा।
सब का मूल एक है जनता का सुख

जनता का सुख, जनता का सुख
पर मिला तो बस दुःख, उपेक्षा,
गालियाँ, भूख, भूख और बस भूख।

या देदे लाइफ जैकेट ही सही।
शायद ये बच जाएं,
पर इतनी फुर्सत में यहाँ कौन है?

नैतिक शिक्षा

नैतिक शिक्षा का पाठ मुझे,
था जिसने वर्षो पढ़ाया
उसी ने मारा मनुष्यता को
दोषी मुझे था ठहराया
मैं हैरान था, परेशान था
था सब मेरे ज्ञान के बाहर का
मैंने मनुष्यता तो जानी थी इन्सानों से
पर जिया तो मात्र प्रकृत में
हवाओं में, पहाड़ों में
निर्झर में, नदीयों में
अब मनुष्यों से भरा शहर
मुझे बिहड़ लगता है
जहाँ हर एक मनुष्य बागी है
अपनी मनुष्यता से, अपनी नैतिकता से
अपने कर्म से, शहर की चकाचौंध में खोया हुआ।
जो सबको अपने जैसा बनाना चाहता है
नैतिकता का मुखौटा लगाकर
नकली गंगा बहाना चाहते हैं।
मनुष्यता और नैतिकता का वजन
अब कुछ ज्यादा हो गया है
तैरना भी ये भूल गए हैं
आधुनिकता और विकास के बाढ़ में
इनका डूबना तो तय है ।
कोई इन दोनों को पुनः तैरना सीखा दे

हम एक और जहाँ बनाएंगे

जी करता है कुछ पढ़ने को कुछ लिखने को
मगर जी कर ।
पर जीने का यहाँ कोई नाम नहीं है
पढ़ लिख कर हमारा यहाँ कोई काम नहीं है।
लोग पढ़ते जा रहे हैं, मरते जा रहे हैं।
विश्वविद्यालयों की दीवारों पर टंगते जा रहे हैं
कुछ पढ़ कर, कुछ मर कर ।
पर जीने का यहाँ कोई नाम नहीं है
पढ़ लिख कर हमारा यहाँ कोई काम नहीं है।
हम एक और जहाँ बनाएंगे
ज्यादा पढ़ कर, थोड़ा लिख कर
ज्यादा जी कर, थोड़ा मर कर
जहाँ पढ़ेंगे सब, बस जी कर, बस जी कर
शिक्षा आज इन दीवारों में बंद समझ ली गई है
जो आप को, हम को शिक्षा के नाम पर सुचनाएं बांट रहा है
इन दीवारों में बनी खिड़कियों से हर रोज मैं बाहर देखता हूं, सूचनाओं से ऊब कर, कई शिक्षाएं मुझे वहाँ मिलती हैं।
यह भी कि मैं भी कभी इन खिलाड़ियों के बाहर था,
इन दीवारों पर लगी बत्तियों ने मुझे इनके अंदर खींच लिया है,

ये बत्तियां बड़ी ही छद्मी हैं, दीवारों की ये सम्पूर्ण व्यवस्था ही छद्मी है, जिसे हमने विद्यालय महाविद्यालय या विश्वविद्यालयों की संज्ञा दे रखी है।
जी चाहता है इन सभी की संज्ञाओं को बदल दूं,
संज्ञा के स्थान पर इनका विशेषण बिठा दूं और कह दूं कि तुम कोई विद्यालय महाविद्यालय या विश्वविद्यालय नहीं,
तुम मात्र सूचना केन्द्र हो, सूचना केन्द्र।

'पा' (पिता)

सोचता हूं आप ना होंगे,
तब मेरा क्या होगा ?
क्या अपनी क़लम मुझे भी बेचनी होगी ?
सब की तरह।
या हो जाऊंगा उपेक्षित,
कुछ की तरह।
क्या मुझे भी समझौता करना होगा ?
आप की तरह!
अपने विचारों से, अपनो के लिए?
'पा' मैं नहीं करना चाहता समझौता,
किसी की भी तरह।
मैं डरता हूं ।
इन वासनाधारियों के समक्ष,
घुटने टेकने से।
इन नकाबपोशों की भीड़ में,
नकाब पहन खड़े होने से,
मैं डरता हूं ।
आजीवन शोषित होने से।
तो उससे कहीं ज्यादा,
मैं डरता हूं।
आजीवन शोषण करने से।
आप हो तो मैं इन सब से,
लड़ता हूं, जीतता हूं।
सोचता हूं आप ना होंगे,
तब मेरा क्या होगा ?
आप आधार हो मेरा,
मेरे विचारों का, मेरे रण का,
आप के बिना मेरा वजूद
वैसा ही है ,जैसे
अहिंसा बिना गांधी,
हिंसा बिना हिटलर।
भक्ति बिना कबीर।
सोचता हूं आप ना होंगे,
तब मेरा क्या होगा ?